क्रिया एवम् उसकी विशेषताएँ

प्र० क्रिया की परिभाषा देते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ० → **क्रिया की परिभाषा →**

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाए, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे – पढ (पढ़ना), खेल (खेलना) आदि।

क्रिया के रूप → प्राकृत भाषा में क्रिया का एक ही रूप होता है

धातु रूप →

प्राकृत में शब्दों के मूल रूप को धातु कहते हैं, और धातु में विविध प्रत्यय जोड़ने से जो रूप बनते हैं, उसे धातु रूप कहते हैं। जैसे: – पढ + इ = पढइ; खेल + इ = खेलइ (इसमें पढ़ क्रिया मूल धातु है। इसमें 'इ' प्रत्यय जोड़ देने से 'पढइ' धातु बन गया जिसका अर्थ हुआ पढ़ता है।

क्रिया रूप की विशेषताएँ →

प्राकृत में क्रिया रूप की निम्नलिखित विशेषताएँ है

(1) इसमें द्विवचन नहीं होता है। केवल एकवचन एवम् बहुवचन होते हैं।
(2) इसमें तीन पुरुष होते हैं: – प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं उत्तम पुरुष।
(3) इसमें कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य प्रायः एक समान होते हैं।
(4) इसमें आत्मनेपद का प्रायः लोप एवम् परस्मैपद रूपों की प्रधानता मिलती है।
(5) इसमें भ्वादि रूपों की व्यापकता पायी जाती है।
(6) इसमें संस्कृत की तरह 'ल' कार नहीं होता है।
(7) इसमें केवल वर्तमान, भूत, भविष्यत, आज्ञार्थक, विध्यर्थक, एवम् क्रियातिपत्ति के रूपों में छः कालों की प्रधानता मिलती है।
(8) इसमें आज्ञार्थक एवं विध्यर्थक, भूतकाल एवं क्रियातिपत्ति के रूपों में प्रायः समानता दृष्टिगोचर होता है।
(9) इसमें वर्तमान काल में प्रथम पुरुष के एकवचन में इ, ए एवम् बहुवचन में न्ति, मध्यम पुरुष के एकवचन में 'सि' और बहुवचन में 'इत्था', 'ह', और उत्तम पुरुष के एकवचन में 'मि' तथा बहुवचन में 'मो' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

Scanned with OKEN Scanner

क्रिया एवम् उसकी विशेषताएँ

प्र० क्रिया की परिभाषा देते हुए इसकी विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उ० → **क्रिया की परिभाषा →**

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना समझा जाए, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे – पढ (पढ़ना), खेल (खेलना) आदि।

क्रिया के रूप → प्राकृत भाषा में क्रिया का एक ही रूप होता है

धातु रूप →

प्राकृत में शब्दों के मूल रूप को धातु कहते हैं, और धातु में विविध प्रत्यय जोड़ने से जो रूप बनते हैं, उसे धातु रूप कहते हैं। जैसे: – पढ + इ = पढइ; खेल + इ = खेलइ (इसमें पढ़ क्रिया मूल धातु है। इसमें 'इ' प्रत्यय जोड़ देने से 'पढइ' धातु बन गया जिसका अर्थ हुआ पढ़ता है।

क्रिया रूप की विशेषताएँ →

प्राकृत में क्रिया रूप की निम्नलिखित विशेषताएँ है

(1) इसमें द्विवचन नहीं होता है। केवल एकवचन एवम् बहुवचन होते हैं।
(2) इसमें तीन पुरुष होते हैं: – प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष एवं उत्तम पुरुष।
(3) इसमें कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य प्रायः एक समान होते हैं।
(4) इसमें आत्मनेपद का प्रायः लोप एवम् परस्मैपद रूपों की प्रधानता मिलती है।
(5) इसमें भ्वादि रूपों की व्यापकता पायी जाती है।
(6) इसमें संस्कृत की तरह 'ल' कार नहीं होता है।
(7) इसमें केवल वर्तमान, भूत, भविष्यत, आज्ञार्थक, विध्यर्थक, एवम् क्रियातिपत्ति के रूपों में छः कालों की प्रधानता मिलती है।
(8) इसमें आज्ञार्थक एवं विध्यर्थक, भूतकाल एवं क्रियातिपत्ति के रूपों में प्रायः समानता दृष्टिगोचर होता है।
(9) इसमें वर्तमान काल में प्रथम पुरुष के एकवचन में इ, ए एवम् बहुवचन में न्ति, मध्यम पुरुष के एकवचन में 'सि' और बहुवचन में 'इत्था', 'ह', और उत्तम पुरुष के एकवचन में 'मि' तथा बहुवचन में 'मो' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

Scanned with OKEN Scanner